Dr. Kumari Priyanka

History department

H.D Jain college, ara

Notes for PG 1, CC 3, unit 1

Topic:–हर्षवर्धन के काल में हेनसांग के द्वारा आर्थिक और धार्मिक जीवन का वर्णन।

आर्थिक स्थिति-हेनसांग के विवरण में भारत की आर्थिक अवस्था का भी उल्लेख मिलता है। इस समय कृषि, उद्योग एवं व्यापार अच्छी दशा में थे। उपज अच्छी होती थी। राज्य की भूमि चार भागों में विभक्त थी। इससे प्राप्त होनेवाली आय राजकीय खर्च, वेतन, पुरस्कार एवं दान-पुण्य के कामों में खर्च होती थी। राज्य उपज का छठा अंश कर के रूप में वसूलता था। राज्य को सीमा शुल्क एवं चुंगी से भी आमदनी होती थी। वस्त्र-उद्योग बहुत उन्नत दशा में था। सूत और ऊन को मिलाकर कौषेय वस्त्र बनाया जाता था। मलमल का भी निर्माण होता था। आभूषण एवं प्रसाधन के अन्य सामान बनाए जाते थे। कारीगरों के अपने संघ होते थे। ब्राह्मण औद्योगिक क्रिया-कलापों में भाग नहीं लेते थे। सोने-चाँदी की मुद्रा के अतिरिक्त कौड़ियों एवं मोतियों का भी व्यवहार मुद्रा के रूप में होता था। भारत दक्षिण-पूर्व एशियाई देशों से अपने पूर्वी एवं पश्चिमी बंदरगाहों से व्यापार करता था। विदेशों को कपड़ा, चंदन, गर्म मसाला, मोती एवं हाथी दाँत की बनी वस्तुएँ भेजी जाती थीं तथा वहाँ से सोना-चाँदी, हींग और घोड़े का आयात होता था। कनौज एक श्रीसंपन्न नगर था, मगर अनेक नगर अपना पूर्व महत्त्व खोकर उजाड़ और वीरान बन चुके थे।

नगर:––हेनसांग ने अपनी यात्रा के दौरान अनेक नगरों का भ्रमण किया। इन नगरों में अधिकांश उजड़ चुके थे और कई दयनीय स्थिति में थे। नगर और ग्राम चौड़ी दीवारों से घिरे हुए थे। उनमें प्रवेश के लिए द्वार बना हुआ था। सड़क चौड़े थे, परंतु गलियाँ संकरी और घुमावदार। रास्ते गंदे थे। लोगों को सड़क को बाईं ओर चलना पड़ता था। मकान में ईंट और खपड़ा का व्यवहार होता था। अनेक मकान चीन से मिलते-जुलते थे। दीवारों को मिट्टी या गोबर से लोप दिया जाता था। खिड़कियों और दरवाजों को सुंदर रंगों से रंगा जाता था। विहारों के निर्माण में विशेष कुशलता दिखाई जाती थी। कनौज में सैकड़ों विहार और 200 और मंदिर थे, परंतु पाटलिपुत्र, श्रावस्ती और कपिलवस्तु उजड़ गए थे।

धार्मिक जीवन :– हेनसांग भारत की धार्मिक स्थिति पर भी महत्वपूर्ण प्रकाश डालता है।चीनी यात्री बौद्ध धर्मावलंबी था, तथापि बौद्धधर्म के अतिरिक्त उसने अन्य संप्रदायों का भी उल्लेख किया है। विदेशी भारत को 'ब्राह्मणों का देश' समझते थे। इससे ब्राह्मणधर्म की व्यापकता का अंदाज सहज ही लगाया जा सकता है।ब्राह्मणधर्म अनेक शाखाओं में विभक्त था। प्रत्येक संप्रदाय अपने विशिष्ट चिह्नों एवं पहनावे से

पहचाना जाता था। संन्यासी समूचे देश का भ्रमण करते थे। वे भिक्षावृत्ति द्वारा भोजन प्राप्त करते थे तथा लोगों में ज्ञान का प्रचार करते थे। वैष्णव और शैवधर्म के अतिरिक्त अन्य अनेक संप्रदाय भी थे। प्रयाग और वाराणसी ब्राह्मणधर्म के प्रमुख केंद्र थे। प्रयाग में प्रति पाँचवें वर्ष हर्षवर्द्धन 'मोक्ष-परिषद' का आयोजन करता था, जहाँ बुद्ध के अतिरिक्त शिव और सूर्य की पूजा होती थी तथा राजा पाँच वर्षों की संचित अपनी समस्त संपत्ति दान में दे देता था। ह्वेनसांग स्वयं भी इसमें सम्मिलित हुआ। बौद्धधर्म उन्नत अवस्था में था, तथापि अनेक प्राचीन बौद्धकेंद्र उजाड़ हो गए थे और उनमें रहनेवाले भिक्षुओं की संख्या काफी घट गई थी। बौद्धधर्म अठारह शाखाओं में विभक्त था, परंतु कन्नौज की सभा में महायान शाखा की श्रेष्ठता स्थापित हुई। ह्वेनसांग के अनुसार बौद्धविहारों की संख्या 5,000 थी तथा उनमें 2,00,000 भिक्षु रहते थे। काश्मीर बौद्धधर्म का महत्त्वपूर्ण केंद्र था। जैनधर्म का हास हो रहा था। यद्यपि यह धर्म उत्तरी भारत से विलुप्तप्राय था, तथापि दक्षिण में इसका प्रचार था। इस समय श्वेताम्बर संप्रदाय ही प्रधान था। वैश्य ही अधिकांशतः जैनधर्म को अपनाते थे।